'मैं' की पहचान आत्मा से है। आत्मा, शरीर और मन के बीच क्या संबंध है?

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

जैसा कि गीता में कहा गया है, आत्मा या 'मैं' वह यात्री है जो अपने गंतव्य तक पहुँचना चाहता है। वह गंतव्य क्या है? गंतव्य आनंदनगर है।

आनंदनगर तक पहुँचने के लिए आत्मा को इस शरीर रूपी का एक वाहन दिया गया है। आत्मा मुसाफिर है। चालक बुद्धि है जो अपने निर्णय से वाहन के चलने के तरीके को तय करती है। मन वह स्टीयरिंग है जो पहियों या इंद्रियों की गति की दिशा को बदल देता है।

या आत्मा मुसाफिर है। चालक बुद्धि है। मन लगाम है। इंद्रियाँ घोडे है। मुसाफिर भगवान के घर जाना चाहता है जहा अनंत आनंद लबालब भरा है।

अब समस्या ये है कि बुद्धि, मन और शरीर और इंद्रियाँ भौतिक या मायात्मक मूल की हैं जबकि आत्मा दिव्य है। मायिक होने के कारण मन संसारी सुख चाहता है जबकि दिव्य होने के कारण आत्मा दिव्य भगवान का अनंत सुख चाहता है।

बुद्धि तय करती है कि 'मुझे क्या चाहिए?' हर कोई केवल एक सुख का मापन करके लक्ष्य तय करता है - 'मुझे सबसे ज्यादा क्या संतुष्ट करेगा?' इस सवाल के जवाब कई हैं ..

'मैं एक डॉक्टर बनना चाहता हूँ।'
मैं एक इंजिनियर बनाना चाहता हूँ।'
मुझे एक मॉडल चाहिए। '

मैं एक स्पोर्ट्समैन बनना चाहता हूं। '
मैं एक राजनेता बनना चाहता हूं। '
मैं अभिनेता-अभिनेत्री बनना चाहता हूं। '
विकल्पों का कोई अंत नहीं है। लेकिन कोई भी विकल्प सुख के लिये ही चुना जाता है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132